शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 सितम्बर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

नारी चुनौतियाँ एवं सशक्तिकरण
(प्रभा खेतान एवं चित्रा मुद्गल के संदर्भ में

श्रीमती रीता सोनी (शोधार्थी)
डॉ. आशा अग्रवाल (शोध निर्देशक)
श्री अटल बिहारी वाजपेयी कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर

शोध संक्षेप

आधुनिक काल में नारी अपनी अवनत हुई स्थिति को उन्नत बनाने और अपनी अलग पहचान बनाने का प्रयत्न करने लगी है। अब उसके समक्ष बाधाएँ नवीन चुनौतियों के रूप में उपस्थित हैं। प्रभा खेतान व चित्रा मुद्गल ने अपने साहित्य में इन चुनौतियों को नारी जीवन से दूर कर उनके जीवन स्तर को उन्नत करने, अपने विकास के लिए स्वतंत्रता प्रदान करने, शिक्षा व समाज के सभी क्षेत्रों में सजगता पैदा करने के प्रयास किये हैं। इसके लिए उन्होंने महिलाओं को अपनी आत्महीनता, शर्म, संकोच छोड़कर जीवन की चुनौतियों को स्वीकार कर उसमें बदलाव लाने के मार्ग सुझाये हैं और महिला सशक्तीकरण के माध्यम से नारी में आत्मनिर्भरता, शिक्षा, स्वाभिमान इत्यादि के भाव जाग्रत किए हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में प्रभा खेतान और चित्र मुद्गल के साहित्य में नारी चुनौतियां और सशक्तिकरण पर विचार किया गया है।

भारतीय संविधान और नारी

नारी और पुरुष किसी भी देश के समाज और परिवार का अविभाज्य अंग है। लेकिन प्राचीनकाल से ही दोनों में काफी भिन्नता है। परिवार, संस्कृति, राजनीति आदि क्षेत्रों में पुरुष का ही वर्चस्व रहा है और स्त्री उसकी अनुगामिनी बनकर भूमिका निभाती रही है। आधुनिक युग में स्त्री की समस्याओं, आकांक्षाओं और उनके विकास को ध्यान में रखकर खुलकर चर्चा होने लगी है और इसमें खुद महिलाएँ भी भाग लेकर अपने अस्तित्व की खोज में निरंतर बढ़ रही है। भारतीय संविधान में महिलाओं के संरक्षण के लिए विभिन्न उपबन्धों का उल्लेख है। संवैधानिक दृष्टि से स्त्री और पुरुष की समानता स्वीकार कर ली गई है।

राजनीतिक क्षेत्र में भी उनको आरक्षण देने की बात कही गई है। आज महिलाओं की चिंतन शक्ति में उपर्युक्त चेतना का संचार हो चुका है, जिसके फलस्वरूप वे काफी उच्च पदों पर भी आसीन हैं, जहाँ उनका प्रवेश निषिद्ध माना जाता था जैसे पुलिस, सेना, रेल विभाग, हवाई जहाज आदि क्षेत्रों में स्त्रियाँ प्रवेश पा चुकी है।

2. स्त्री के समक्ष चुनौतियाँ

नारी प्रगति आन्दोलन में स्त्री-पुरुषों के अधिकार सम्बन्धी वैषम्य दूर कर उनमें समानता स्थापित करने की चर्चा विशेष चल रही है। बहुत से पाश्चात्य देशों में वहाँ की स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त हो चुके हैं।

आधुनिक महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में समान अधिकार का यह द्वन्द अभिव्यक्त किया गया है। प्रभा जी के उपन्यास 'छिन्नमस्ता' की प्रिया नारी समानता का समर्थन करती हैं। उनके अनुसार "स्त्री पुरुष का सम्बन्ध मालिक और गुलाम का ? भोक्ता और भोज्य का ? व्यक्ति

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 सितम्बर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

और वस्तु का ? कब तक यह द्वन्द चलेगा ?" अर्थात् यहाँ पत्नी अपनी इच्छा से कुछ करना चाहती है। पढ़ी लिखी होने के कारण वह अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करती रहती है। पुरुष वर्ग के अनुसार पत्नी को समान अधिकार की मांग नहीं करनी चाहिए। आधुनिक जीवन की व्यस्तताओं में नारी की भी अपनी समस्याएँ हैं। अपना सर्वस्व समर्पण करने के बाद भी पुरुष उसे समानता, स्वातंत्र्य आदि की दृष्टि से अपने जीवन में उचित स्थान नहीं देना चाहते क्योंकि उनमें अपना अहं प्रबल है।

'एक जमीन अपनी' उपन्यास की अंकिता सुधांशु को पाने के लिए बहुत कठिन रास्तों से गुजरी लेकिन सुधांशु ने सदैव उसे प्रतडित किया। उसे वस्तु बनाकर रखा। इसलिए वह कहती है कि "मांगा था मात्र भीतर की उस स्त्री का सम्मान। अस्तित्व का स्वीकार और इस्तेमाल का विरोध...। मगर, सुधांशु के भीतर के अहंकारी पुरुष की निरंकुश प्रवृत्ति जो उसकी भावनाओं को चुटकी पर धरे सिक्के की भाँति उछालता चित भी मेरी पट भी मेरी।"

इसी तरह प्रभा जी के उपन्यास 'छिन्नमस्ता' की प्रिया हर चुनौती को अपने अंतस में छिपाकर संघर्ष करके नये मार्ग पर बढ़ती है। "बचपन से लेकर जवानी तक और अड़तालिस की उम्र तक प्रिया दर्द ओढ़ते-बिछाते आई है।" 'छिन्नमस्ता', की प्रिया, 'पीली आँधी' की सोमा, पद्मावती, 'अग्निसंभवा' की आईवी, 'आवां' की नमिता, स्मिता, 'एक जमीन अपनी' की अंकिता आदि स्त्रियाँ अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत हैं।

साथ ही नारी शिक्षा, वैश्यावृत्ति, दहेज प्रथा, आर्थिक पराधीनता, विचारात्मक टकराव जैसी चुनौतियों का सामना करती है।

नारी शिक्षा

नारी के अपने अस्तित्व और सामर्थ्य को विश्वास और पहचान देने की बातों पर ध्यान दिया जाए तो सबसे प्रमुख तथ्य उभरकर सामने आता है, नारी शिक्षा। नारी प्रगति के प्रमुख तत्वों में से एक है नारी शिक्षा। आधुनिक युग में नारी शिक्षा प्राप्त करने के लिए सज है और काफी हद तक नारियों ने शिक्षा में उन्नति की है।

चित्रा जी और प्रभा जी के उपन्यासों में ऐसी अनेक नारी पात्रों का वर्णन मिला है जो शिक्षित हैं। 'आवां' उपन्यास की नमिता अपनी शिक्षा के बल पर विज्ञापन जगत में आती है, परन्तु वह ऐसी नारी है जो अपनी पढ़ाई को पूरा करने का प्रयास करती है लेकिन पढ़ाई पूरी नहीं कर पाती। क्योंकि "दाखिले के लिए नौकरी का प्रमाण पत्र संलग्न करना जरूरी होता है।"

चित्रा जी के उपन्यास की अंकिता, अंजना, वासवानी, सुनन्दा, सुवर्णा, गौतमी ये सभी शिक्षित नारी है और प्रभा जी के उपन्यास की प्रिया, लता भाभी, रीतु, सोमा इत्यादि शिक्षित नारी पात्र है फिर भी इन्हें घरेलु कामकाज में झोंक दिया जाता है। 'पीली आँधी' की लता भाभी द्वारा नई दुल्हनों द्वारा किये जाने वाले कार्यों की जानकारी दी है। "बहुओं की पारी बंधी हुई है। जैसे एक महीने भंडार घर मैं संभालती हूँ। एक महिने भाभी भंडार घर से सारा सामान निकालती हैं, घी, तेल, नापकर महाराज जी के संभला देना पड़ता है।" इस प्रकार समाज एवं परिवार में स्त्री की प्रतिभा को कैद रखा जाता है तथा घरेलु कामकाज में आजीवन धकेल दिया जाता है।

वैश्यावृत्ति

नारी के समक्ष वैश्यावृत्ति एक ज्वलंत एवं व्यापक समस्या है। दिन प्रतिदिन वैश्यावृत्ति

बढ़ती ही जा रही है। वैश्याओं के लिए समाज में अनेक प्रकार के बंधन लगाए जाते हैं। 'छिन्नमस्ता' उपन्यास की तिलोत्तमा प्रिया की रखैल सास है और वह प्रिया से कहती है, "तेरे ब्याह पर मैं ना जा सकी।... समाज में किस किस का मुँह बंद किया जाए।" वैश्याओं की संतान को भी यह तिरस्कार भोगना पड़ता है। 'छिन्नमस्ता' उपन्यास की नीना कहती है कि मुझे पता है कि मैं एक नाजायज संतान हूँ। मम्मी कितना भी मांग में सिन्दूर लगाएं, उस लाल रंग में थोड़ी कालिख घुली हुई है। इसलिए मम्मी का सिन्दूर चमकता नहीं है।"

जीविका का साधन न मिले तो भी मजबूरन वैश्यावृत्ति करनी पड़ती है। वह नारी वैश्यावृत्ति में अपनी इच्छा से नहीं जाती फिर भी जीविका के लिए यह व्यवसाय अपनाने को विवश होना पड़ता है। चित्रा जी के उपन्यास 'आवां' की गौतमी और अनीसा एक वैश्या है जो अपना धन्धा छोड़कर श्रम करने का प्रयास करती है। लेकिन सामाज उसे ऐसा करने की स्वीकृति नहीं प्रदान करता। इस प्रकार नारी यदि एक बार वैश्या बन जाती है तो फिर वैश्या के स्वरूप से बाहर नहीं निकल सकती है।

दहेज प्रथा

आधुनिक हिन्दु समाज में विवाह की सबसे कठिन भयंकर समसस्या दहेज की रही है। यह भारतीय समाज की व्यवस्था को लगी हुई बड़ी भयंकर बीमारी है। समाज में अनेक पारिवारिक समस्याओं का कारण दहेज प्रथा है। 'छिन्नमस्ता' उपन्यास की प्रिया को अपनी शादी में दहेज नहीं मिला, जिससे पति नरेन्द्र अत्यंत क्रुद्ध होते हुए कहता है कि "क्या लेकर आई थी तुम अपने पीहर से दस भर सोना, वह ले लो।" अनमेल विवाहों का भी एक कारण है दहेज प्रथा।

कामकाजी नारी

चित्रा मुद्गल और प्रभा खेतान के उपन्यासों में कामकाजी नारी कई चुनौतियों से सामना करते हुए दृष्टिगत होती हैं। प्रभा जी के उपन्यास 'स्त्रीपक्ष' की वृंदा पति से तलाक के बाद ब्यूटी क्लिनिक चलाते हुए अपनी संतानों का पालन-पोषण करती है। 'छिन्नमस्ता' की प्रिया और नीना दोनों मिलकर व्यवसाय करती हैं। 'आओ पेपे घर चलें', 'अग्निसंभवा' की आईवी, 'एड्स' की कुकु ये सभी वैश्विक धरातल पर काम करने वाली नारियाँ हैं। वहाँ औरत संघर्ष के साथ रोती हुई नजर आती है, क्योंकि अमेरिका, हांगकांग जैसी धरती पर कामकाजी नारी को कई चुनौतियों से गुजरना पड़ता है। चित्रा जी के उपन्यास 'आवां' की नमिता कामगार अघाड़ी है। तंगहाली में जीवन जीती लड़कियाँ देह व्यापार के षड़यंत्र को समझ नहीं पाती और नौकरी की चाह में इस देह व्यापार के दलदल में फँसकर छटपटाती है। "अन्ना साहब अपने अभिन्न मित्र की पुत्री नमिता को नौकरी के जाल में फंसाकर यौनाचार का घिनौना कार्य करते है। अन्ना साहब की गिरफ्त से मुक्त नमिता अंजना वासवानी के अभिजात्य षड़यंत्र में फंसती है।" इस प्रकार नारी परिवार की तंगहाली के कारण भी कई समस्याओं का सामना करती है।

आर्थिक पराधिनता

आर्थिक मामलों में स्त्री हमेशा पुरुषों पर निर्भर है। आधुनिक काल में अकार स्त्री नौकरी करके कमाती है। इस दशक में भले ही स्त्री को आर्थिक स्वतंत्रता मिली है लेकिन फिर भी वह आर्थिक अभाव से ग्रसित है। आवां उपन्यास की नमिता पढ़ी-लिखी है। लेकिन "अपाहिज पिता के कारण नमिता अपनी पढ़ाई पूरी नहीं कर पाती। उसकी

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 सितम्बर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

माँ और वह श्रम संस्था में पापड़ बेलती है। नमिता साड़ियों में फाल लगाती है, ट्यूशने भी करती है।" 'एक जमीन अपनी' उपन्यास की अंकिता भी पति से तलाक लेकर नौकरी करके अपना जीवन निर्वाह करती है और माँ की इच्छाओं को पूरा करने में लगी रहती है। प्रभा जी के उपन्यास 'अपने-अपने चेहरे' की रमा का आर्थिक शोषण होता है "रमा उनका पूरा व्यापार संभालती है, भाग दौड़कर आर्डर लाती और कमाया हुआ सारा धन मिस्टर गोयनका के एकाउंट में जमा करती। जिन रुपयों की वह स्वयं हकदार होती है... अर्थात् दूसरी औरत बनकर जीने वाली रमा का मि. गोयनका और उनका परिवार आर्थिक शोषण करता है।" 'आओ पेपे घर चले' की कैथरिन और छिन्नमस्ता प्रिया, दाई माँ इत्यादि नारियाँ आर्थिक पराधीनता का शिकार होती है।

वैचारिक टकराव

स्त्री और पुरुष जब एक साथ काम करने लगें तब दोनों में प्रतियोगिता की भावना उत्पन्न होती है। कैरियर में ऊँचे पद प्राप्त कर आगे बढ़ने की संभावना में परिवार टूटने लगते हैं। "आर्थिक स्वतंत्रता और अस्तित्व के लिए स्त्रियों ने पुरुषों से टकराना शुरू किया, उसे पुरुष समाज बर्दाश्त नहीं कर सका। सदियों से स्त्री पर एकाधिकार पुरुष अपना कर्तव्य समझता रहा है। इन दो विपरित स्थितियों के कारण स्त्री-पुरुष के परम्परागत संबंध विघटित हुए हैं।' छिन्नमस्ता उपन्यास की प्रिया जब व्यवसाय में आगे कदम बढ़ाती है तो नरेन्द्र उस पर अनेक आरोप लगाता है, तब प्रिया सोचती है "मैंने नरेन्द्र के अधीन रहकर जो कुछ भी किया, वह सब स्वीकृत था, मगर कार्य जगत में जब मैं स्वतंत्र निर्णय लेने लगी, मुझसे उसकी निगाह में पत्नी की भूमिका नहीं निभ सकी, मेरी हर बात में उसे सौ-सौ खामियाँ नजर आने लगी।" पति का निरन्तर व्यापार की दुनिया में लगे रहना, पत्नी की मातृत्व चाह को न समझना तथा व्यापारी स्वार्थ के लिए सही गलत को न समझना, एक दिन पति पत्नी में वैचारिक टकराव का कारण बनता है। प्रभा जी के उपन्यास 'एड्स' में 'पोट्रिशिया और हेम्पस' के परस्पर विरोधी देखने को मिलते हैं।

चित्रा जी के उपन्यास 'एक जमीन अपनी' की अंकिता और सुधांशु की जीवन भी कुछ ऐसा ही है। सुधांशु अहंकारी निरंकुश प्रवृत्ति का है, जो अंकिता को हमेशा प्रताड़ित करता है। इसी कारण 'आवां' उपन्यास की गौतमी का पति भी अहंकारी प्रवृत्ति का पुरुष था। वह शराबी, व्याभिचारी और अत्याचारी पुलिस अधिकारी था। गौतमी उसके व्यवहार से त्रस्त थी। इसलिए वह उससे तलाक ले लेती है। इस प्रकार पति-पत्नी में अहम्, स्वच्छंद जीवन के प्रति लालसा, अविश्वास इत्यादि के कारण दाम्पत्य जीवन विघटित होता है।

महिला सशक्तिकरण के उपाय

स्त्रियाँ साधारणतः अपने परिवार की रक्षा के लिए जितनी चिंतित होती हैं उतना अपने स्वास्थ्य के बारे में नहीं। अतः लड़कियों के लिए पोषाहार आदि की व्यवस्था करना, अपने मन पसन्द कैरियर चुनने का अवसर प्रदान करना परिवार वालों का सदा जागरूक रहना कि लड़कियाँ किसी से कम नहीं हैं, ये सभी नारी सशक्तिकरण के उपाय हो सकते हैं, लेकिन प्रभा जी और चित्रा जी के उपन्यासों के अन्तर्गत नारी सशक्तिकरण के तीन उपाय हैं-

(क) शैक्षणिक योग्यता

(ख) विचारों में स्वतंत्रता

(ग) आत्मविश्वास एवं स्वाभिमान

क) शैक्षणिक योग्यता

प्रभा जी और चित्रा जी दोनों पढ़ी-लिखी एवं उच्च श्रेणी शिक्षा प्राप्त नारी है। अतः दोनों ही लेखिकाओं की अधिकांश नारी पात्र शिक्षित हैं। जीवन में आने वाली प्रत्येक समस्या का निवारण करने के लिए वे सभी राह ढूँढती हैं। शिक्षा के बल पर नारियाँ आत्म निर्भर बनती हैं और 'आओ पेपे घर चले' की प्रभा उच्च शिक्षा प्राप्त कर ढेर सारा रुपया कमाना चाहती है ताकि वह अपनी जमीन पर मारवाड़ी समाज से लड़ सके। इसके लिए वह आर्थिक रूप से स्वतंत्रता से जीने की पहली शर्त मानती है। इतना ही नहीं औरत के अस्तित्व के लिए उसकी जेब भारी होना आवश्यक मानती है।- "नहीं, मेरी लड़ाई इसी समाज से चलेगी। आप नहीं जानती, बहन जी, औरत की सारी स्वतंत्रता उसके पर्स में निहित है।"

आज स्त्री में शैक्षणिक योग्यता हो तो वह पति के जीवन में आई दूसरी स्त्री को झेलने की आवश्यकता नहीं। रीतु इसका एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। रीतु की माँ मिसेज गोयनका अशिक्षित होने के कारण इस त्रासदी को झेलती है। रीतु अपने पैरों पर खड़ा होने का हौसला रखती है। इसी तरह 'स्त्रीपक्ष' की वृंदा अपने हक की लड़ाई लड़ती है।

चित्रा जी के उपन्यास की 'सुनन्दा' शैक्षणिक योग्यता के कारण ही अपने अधिकार की लड़ाई लड़ती है। और 'एक जमीन अपनी' उपन्यास की अंकिता अपनी शिक्षा के बल पर अपनी अस्मिता बनाये रखते हुए विज्ञापन जगत की चकाचैंध दुनिया से बची रहती है।

ख) विचारों में स्वतंत्रता

नारी में आत्मनिर्भरता लाने के लिए सामाजिक दृष्टिकोण में आमूल परिवर्तन आवश्यक है। नारी के बढ़ते हुए विकास कदमों के साथ-साथ आज भी उसके जीवन की समस्याएँ, उसके अस्तित्व के लिए चुनौती बनकर आ खड़ी हुई है। इसलिए प्रभा जी और चित्रा जी के उपन्यासों में महिला सशक्तिकरण के उपाय के अन्तर्गत 'विचारों में स्वतंत्रता' को आवश्यक बताया गया है। छिन्नमस्ता उपन्यास की प्रिया पुरुष द्वारा नारी परिवर्तन को सह न सकने वाली समस्या के संदर्भ में कहती है कि "हर व्यक्ति अपने आप में एक ईकाई अवश्य होती है पर उसमें सच्चे स्त्री और पुरुष वहीं हो पाते हैं जो पुरूष प्रधान समाज की सीमाओं को पार करके अपने स्वभाव में स्त्री की करूणा को संचित कर पाते हैं, वे ही जीवन का सच्चा सृजन कर पाते हैं।" 'आवां' की गौतमी भी स्वतंत्र चिारों वाली नारी है। इसलिए अपने व्याभिचारी पति से मुक्ति प्राप्त करती है और 'छिन्नमस्ता' की प्रिया परंपरागत विचारों से स्वतंत्र विचार रखती है इन्हीं विचारों के कारण चमड़े का व्यवसाय करती है।

ग) आत्मविश्वास एवं स्वाभिमान

प्रभा जी और चित्रा जी ने महिला सशक्तिकरण के लिए तीसरा उपाय सुझाया है- आत्मविश्वास एवं स्वाभिमान और इसी पर आधारित है समाज में सम्मान जनक स्थान। प्रभा खेतान के उपन्यासों की नायिकाएँ आत्मविश्वास एवं स्वाभिमान को विशेष महत्व देती है। क्योंकि स्त्री को अपनी अस्मिता बनाये रखने के लिए आत्मविश्वास होना आवश्यक है। 'आओ पेपे घर चले' की नायिका प्रभा, 'एड्स' की कुक्कु, 'छिन्नमस्ता' की प्रिया और नीना, 'अपने-अपने चेहरे' की रमा, 'पीली-आँधी' की सोमा एवं चित्रा इत्यादि ऐसे नारी चरित्र है जो आत्मविश्वास एवं

स्वाभिमान से परिपूर्ण होकर अपना-अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाती है।

चित्रा मुद्गल ने अपने उपन्यास 'एक जमीन अपनी' में नारी सशक्तिकरण के उपाय के अन्तर्गत 'भारतीय नारी के स्वतंत्र अस्तित्व एवं स्वाभिमानी संघर्षशील चरित्र के माध्यम से नारी-चिंतन के दशा में संतुलन स्थापन करने का प्रयास किया है। और यह बात बतलाया है कि नारी, आधुनिक नारी अपने संपूर्ण वजूद के साथ आज हर मोर्चे में कामयाब हो रही है, एक जमीन अपनी बना रही है।" इसका साक्षात् उदाहरण अंकिता है। इसके अतिरिक्त 'गिलिगुडु' उपन्यास की सुनगुनियाँ भी आत्मविश्वास एवं स्वाभिमान के बल पर अपना जीवन व्यतीत करती है।

निष्कर्ष

अतः प्रभा जी और चित्रा जी के उपन्यासों की नारी विभिन्न चुनौतियों का सामना करती है। प्रभा जी के उपन्यासों में नारी वैश्विक स्तर, आर्थिक स्तर व सामाजिक स्तर पर चुनौतियों को स्वीकार करते हुए नारी सशक्तिकरण के उपाय भी प्रस्तुत करती है। चित्रा जी के उपन्यासों में नारी कामघार, अघाड़ी, विज्ञापन जगत की चकाचैंध दुनियाँ से लड़ती नजर आती है तथा घर से दफ्तर के बीच वह संघर्षशील चेतना का आवरण धारण कर नई सभ्यता के लिए अपने नये अस्तित्व का परिचय देती है क्योंकि नारी हार मानना और पीछे मुड़कर देखना अब उसने छोड़ दिया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 छिन्नमस्ता: प्रभा खेतान, पृष्ठ
2 आवां: चित्रा मुद्गल, पृष्ठ 137
3 पीली आंधी: प्रभा खेतान, पृष्ठ 180
4 छिन्नमस्ता: प्रभा खेतान, पृष्ठ
5 छिन्नमस्ता: प्रभा खेतान, पृष्ठ
6 छिन्नमस्ता: प्रभा खेतान, पृष्ठ 266
7 चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में नारी: डॉ. राजेन्द्र बाविस्कर, पृष्ठ 151
8 चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य: कल्पना पाटील, पृष्ठ 119
9 प्रभा खेतान के उपन्यासों में नारी: डॉ. अशोक मराठे, पृष्ठ 86
10 स्त्री विमर्ष: डा॰. विनय कुमार पाठक, पृष्ठ 52
11 छिन्नमस्ता: प्रभा खेतान, पृष्ठ 203
12 छिन्नमस्ता: प्रभा खेतान, पृष्ठ 211